components viz. Himalayan Rivers Development Component and the Peninsular Rivers Development Component. The Himalayan Rivers Development Component envisages construction of storages in the main Ganga and the Brahmaputra rivers and their principal tributaries in India and Nepal so as to conserve monsoon flows for flood control. Hydropower generation and irrigation. Interlinking canal systems will be provided to transfer surplus flows of Kosi-Gandak and Ghaghra to the west.

The Peninsular Rivers Development Component consists of 4 major parts as under:—

(i) Inter-linking of Mahanadi-Godavari/Krishna-Cauvery rivers and building storages at potential sites in these basins.

(ii) Inter-linking of west flowing rivers, north of Bombay and South of Tapi;

(iii) Inter-linking of Ken-Chambal; and

(iv) Diversion of other west flowing rivers.

In all 17 water transfer links are proposed under this component.

The National Water Development Agency was set up in 1982 to undertake studies on 17 water transfer links as envisaged in the Peninsular Rivers Development Component of the National Perspectives for water resources development of the country. As programmed, the Agency completed preliminary feasibility reports on 5 water transfer links by the end of VII Plan (1989-90). The Agency has completed during 1990-91 studies on two more links and is likely to complete studies on the remaining links by 1994-95. The water transfer links for which preliminary feasibility reports have been prepared are as under:

1. Mahanadi—Godavari (Dowaliswaram).
2. Godavari (Polavaram)—Krishna (Vijayawada).
3. Par—Tapi.
4. West flowing rivers of Kerala—Vaigai.
5. Ken—Betwa.
6. Godavari (Inchampalli)—Krishna (Pulichintala).
7. Parabeti—Kalisindh—Chambal.

The preliminary feasibility reports of these 7 links have been forwarded to the concerned State Governments for their comments.

In the case of Himalayan rivers, there are 19 water transfer links for which the feasibilty reports are required to be prepared by National Water Development Agency. The Agency has a programme to take up five such water transfer links during the Eighth Plan for detailed surveys and investigations.

गेहूं की नई किस्म

*136. श्री राम जेठमलानी :
डा० जितेन्द्र कुमार जैन :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या गेहूं की सात नई किस्मों का पता लगाया गया है ;

(ख) यदि हां, तो उनका ब्यौरा क्या है ;

(ग) किसानों को इन किस्मों के बीजों की उपलब्धता की प्रस्तावित वार्षिक मात्रा कितनी है; और

(घ) इन नई किस्मों के परिणामस्वरूप गेहू की पैदावार में कितनी अनुमानित वृद्धि होगी तथा उसका ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्री (श्री बलराम जाखड़) : (क) जी हां।

(ख) विस्तृत ब्यौरा विवरण में दिया गया है : (नीचे देखिए)

(ग) यह संबंधित राज्यों की मांग पर निर्भर करेगा ।

(घ) विवरण में दी गई पैदावार क्षमता के अनुसार पांच से दस प्रतिशत तक ।

विवरण

गेहूं की नई सात किस्में

किस्म	क्षेत्र जिनके लिए उपयुक्त है	कृषि स्थिति	उपज क्षमता	प्रमुख विशेषतायें
1	2	3	4	5
डब्ल्यू० एच० 542	उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र इसमेंपंजाब, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश और राजस्थान (कोटा) औरउदयपुर मंडलों को छोड़कर	सिंचित समय पर बोयी गई	65–70 क्विं० प्रति हैक्टर	भूरा, पीला और काला रतुआ सहिष्णु, चूर्णी फफूंद और पत्ती अंगमारी रोधी सामान्य परिपक्वता, अच्छी चपाती बनाने के गुणों वाली,
पी०बी०डब्ल्यू०–299	–वही–	बारानी समय पर बोई गई	35 क्विं० प्रति हैक्टर	तीनों रतुओं और करनाल बन्ट के लिए भी अत्यधिक रोधी, अच्छी चपाती बनाने की क्वालिटी वाली
के० 8804	उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र इसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार पश्चिम बंगाल और अन्य पूर्वी राज्य आते हैं।	सिंचित समय पर बोई गई	50–55 क्विं० प्रति हैक्टर	भूरा रतुआरोधी और काला और पीला रतुआ सह सामान्य कड़े दानों के साथ दुगनी बौनी
एच०पी० 1633	उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र इसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और अन्य पूर्वी राज्य	सिंचित पिछेती बुआई	40–45 क्विं० प्रति हैक्टर	इससे अच्छी उपज मिलती है और सोनालिका की तरह अनकूलनीयता, पत्ती रतुआ,

	आते हैं			रोधिता वाली, अधिक प्रोटीन तत्वों और अच्छी चपाती बनाने के गुणों वाली ।
डी० डब्ल्यू०आर० 162	दक्षिण पठारी क्षेत्र इसमें महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और दक्षिण के मध्य मैदानी क्षेत्र आते हैं	सिंचित समय पर बोयी गयी	45–50 क्विं० प्रति हैक्टर	तना और पत्ती रतुआ और पद गलन सहय, अम्बरी रंग के सामान्य आकार के दाने । अधिक प्रोटीन तत्वों वाली और अच्छी चपाती बनाने की क्वालिटी वाली ।
एच०पी०डब्ल्यू० 42	उत्तर पर्वतीय क्षेत्र (ऊंची पहाड़ियां) इनमें जम्मू और काश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश के समुद्र, तल से 1500 मीटर ऊंची पहाड़ियों वाले क्षेत्र शामिल हैं ।	वाराणी समय पर बोयी गयी	30–35 क्विं० प्रति हैक्टर	सोनालिका से 15 प्र०श० अधिक उपज । पीला और भूरा रतुआ से अधिक मात्रा में रोधिता । फ्लेग स्मट रोधी । अच्छी चपाती बनाने की क्वालिटी वाली।
एच०डी० 2285	संपूर्ण उत्तर भारत इसमें उत्तर पश्चिम और उत्तर पूर्वी क्षेत्र आते हैं।	सिंचित पिछेती बुआई वाली (दिसम्बर के अंत से मध्य जनवरी तक बुआई)	30–35 क्विं० प्रति हैक्टर	करनाल बन्ट की अधिक रोधी । अम्बरी रंग के सामान्य आकार के दाने और अच्छी चपाती बनाने की क्वालिटी वाली।